कोई रीति - निती अथवा प्रक्रिया कई और अनवरत प्रयोगों से गुजरने के बाद परंपरा का रूप ले पाती है और वह संगत परिवर्तन की गुंजाइश भी साथ लेकर चलती है। स्वभाविक है आधुनिकता की समझ के लिए परंपरा का ज्ञान आवश्यक है।
परिवर्तन की प्रक्रिया परंपरा का ही हिस्सा है, जो आधुनिकता को जन्म देती है ~~जबकि~~ क्योंकि आधुनिकता की शुरुआत शून्य से नहीं हो सकती। परिवर्तन की प्रक्रिया द्वारा किसी परंपरा के आधुनिक रूप लेने में निरंतरता रूपी कड़ी का विशेष महत्त्व है।

आधुनिकता का सांस्कृतिक संदर्भ

जहाँ प्राचीन मान्यता के अनुसार मनुष्य एक शाश्वत धर्म के सहारे जीते हैं, वहीं प्रचलित आधुनिक मान्यता धर्म के स्थान पर संस्कृति को रखती है। यदि परंपरागत मान्यता सही है तो इसका महत्त्व मात्र ऐतिहासिक ही हो सकता है उसमें स्थायी स्वरों की खोज ही व्यर्थ है क्योंकि इस ~~व~~ दृष्टि से पुरानी सांस्कृतिक परंपरा का एक पक्ष सार्वभौम, आधुनिक सभ्यता की भूमिका मात्र है. जिसमें वह अपना परिष्कृत एवं विकसित रूप पाती है परंपरा का दूसरा संदर्भ, जो आधुनिकता की ~~भूमिका~~ अनुकूल नहीं है

B·A - sem-V

काल के द्वारा निरस्त जकड़न मात्र है।
एक किंवदंती है कि खलीफा उमर ने
सिकंदरिया के पुस्तकालय के विषय में कहा
था कि यदि उसकी पुस्तकें क़ुरान के अनुकूल
है तो अनावश्यक है और यदि प्रतिकूल
है तो मिथ्या है।
कालिदास ने कहा था कि पुराना सब अच्छा
नहीं होता, नया सब बुरा नहीं होता। दोनों
का समन्वय जरूरी है। मनुष्य का
विवेक सर्वोपरि है और उसी के आधार पर
समन्वय संभव होगा। परंपरा साधन है,
साध्य नहीं। बुद्ध का उपदेश इस संदर्भ
में बहुत सार्थक है नाव नदी के लिए होती है।
उसका उपयोग करो, कृतज्ञ भाव से उसका
बोझ जीवन भर ढोते मत फिरो। अचेतना
नाव तुम्हारी भावना को नहीं समझेगी
पर उसके भार से तुम्हारी कमर अवश्य
झुक जाएगी।
परंपरा के सतत्-अस्तित्व के लिए क्या कोई
कल्पनाशील ~~प्रत्य~~ प्रयत्न किए जाते हैं।
असहमति, विरोध और सुधार की परंपराओं
का मूल्यांकन किस तरह किया जाता है?
~~इस~~ इन प्रश्नों के समाधान-कारक उत्तरों पर
मानव की नियति आकार लेती है। विकास
और आधुनिकता आवश्यकता है पर वे
विसंगतियां और विकृतियां भी उत्पन्न करते हैं।